पाँच आज्ञा ही मोक्ष ळे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के सौ पुत्र थे। उनके निन्यानवें पुत्र मोक्षगामी हो गये। भरत चक्रवर्ती सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करते थे। भरत चक्रवर्ती ने अपने पिता से मोक्ष का मार्ग पूछा। भगवान ऋषभ ने कहा– निन्यानवें पुत्र क्रमविज्ञान के द्वारा मोक्षगामी हुए हैं। तुम्हें मैं अक्रम विज्ञान के द्वारा मोक्ष का ज्ञान कराता हूँ। क्रमविज्ञान मोक्ष जाने का सीढ़ी का मार्ग है। अक्रम विज्ञान लिफ्ट का मार्ग है।

व्यवस्थित शक्ति का उद्देश्य आत्मज्ञान कराना है, अपने अस्तित्व की जानकारी प्रदान कराना है। मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? इसके विषय में चिंतन किया जाता है। यह सृष्टि कौन चलाता है? कुछ लोग ईश्वर को सृष्टि कर्ता कहते हैं। ईश्वर की इच्छा के बिना सृष्टि का एक पत्ता भी नहीं डोलता। सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह ईश्वरकृत है। नदी, पहाड़, झरने, वृक्ष, मनुष्य सब ईश्वरसृष्ट है। कुछ लोग यह मानते है कि सृष्टि को चलाने वाले व्यवस्थित शक्ति है। संयोग मिलकर सृष्टि को चलाते हैं।

सृष्टि में जीव और अजीव दो मुख्य तत्व है। जीव का जन्म–मरण, हलन–चलन आदि क्रियाएं होती रहती है। इसके कारण संसार में जीव भ्रमण करता रहता है। जीव संसार में अशुद्ध अवस्था में रहता है। उसे शुद्ध करना हमारा लक्ष्य है। कर्मों के संयोग से आत्मा और कर्म एक–दूसरे से बद्ध हो जाते है और आत्मा की स्वाभाविक गति अवरूद्ध हो जाती है। इस संसार में मनुष्य को यह भ्रांति है कि मैं सबकुछ कार्य करता हूं। मैं ज्ञाता हूं, मैं द्रष्टा हूं, मैं पिता हूं, मैं माता हूं, यह पुत्र मेरा है, यह धन मेरा है और पद और प्रतिष्ठा मेरी है। इसी भ्रान्ति धारणा में मनुष्य जीवन जीता रहता है। किन्तु उसका यह विचार ठीक नहीं है। ये सब औपाधिक हैं। कर्ता भाव गलत है। यही सब दुःखों का कारण है।

इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व ऐसा है जो सनातन सत्य है। वह तत्व है आत्मा। आत्मा के अतिरिक्त जितने भी तत्व है, वे सभी गलन–मिलन धर्मा हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें पुद्गल कहा

जाता है। यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। आत्मदर्शन जीवन का सनातन सत्य है। आत्मदर्शन सही दृष्टि सही सोच के माध्यम से लोगों को शिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। दृष्टि के सही होने पर सब ठीक हो जाता है। इस संसार का वास्तविक सत्य क्या है? इसे हमे जानना है। सबसे निरपेक्ष होकर इस विषय पर चिन्तन करना चाहिए।

कुदरत का कानून अर्थात् ईश्वर का बनाया हुआ नियम। यह एक ऐसा कानून है जहां सबको समान दृष्टि से देखा जाता है। किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। प्रकृति में जितने भी पदार्थ हैं सब ईश्वर के कानून से चलते हैं। सूरज का निकलना, हवा का बहना, नदियों का प्रवाहित होना, अग्नि का जलना, ऋतुओं का परिवर्तन होना, नदी, पहाड़, झरनों की रचना होना सब ईश्वर के कानून से होते रहते हैं। प्रकृति का नियम शाश्वत नियम हैं। प्रकृति कभी अपवाद नहीं करती। सबके साथ समान व्यवहार करती है। प्रकृति के साथ जो प्राणी जीवन–यापन करता है, उसे किसी प्रकार का रोग–दोष नहीं हो सकता। वह शतायु होता है। इसी संबंध में आत्म विज्ञान का विवेचन किया गया है। कूदरत का कानून जड़ एवं चेतन जितने भी पदार्थ हैं, सब पर समान रूप से लागू होता है। दोनों के माध्यम से जीवन चलता है।

प्रकृति में सभी जीवन–यापन करते हैं। जीव की चार गतियां हैं। अपने–अपने कर्म के अनुसार सभी जीव गतियों को प्राप्त करते है। कुछ लोग पूर्वजन्म में अच्छा कर्म करते हैं तो उन्हें अच्छी योनि प्राप्त होती हैं। कुछ लोग बुरा कर्म करते हैं तो उन्हें बुरी योनि प्राप्त होती है। एक व्यवस्थित शक्ति ही सम्पूर्ण सृष्टि को संचालित कर रही है। कुछ लोग उसे ईश्वर कहते हैं, कुछ लोग उसे व्यवस्थित शक्ति कहते हैं और कुछ लोग यह कहते हैं कि यह नियम के अनुसार अपने आप घटित हो रहा है। सभी दृष्टियों में एक बात समान है। वह बात है कोई न कोई शक्ति अवश्य है, जो इस सृष्टि का संचालन कर रही है।

कुदरत का कानून निश्चित है। उसमें कुछ भी हेर–फेर नहीं होता। कुदरत के कानून के अनुसार सभी को पुरस्कार और दण्ड मिलता रहता है। कुदरत का कानून सभी के लिए समान है। वहां न कोई छोटा है और न बड़ा। एक मां के दो पुत्रों में एक बड़ा अधिकारी बन जाता है और दूसरा साधु। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि एक ने पूर्वजन्म में ऐसा कर्म किया था, जिसके परिणाम के रूप में वर्तमानकाल में ऐसी परिस्थिति का निर्माण हुआ जिससे एक माता के दो पुत्रों में स्पष्ट भेद हो गया। एक अधिकारी बन गया और एक साधु। यह सब कर्मों का खेल है। जो जैसा कर्म किया हैं वह उसी का फल भोगने के लिए आगामी जीवन प्राप्त करता है। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। प्रकृति के नियम में कोई बदलाव नहीं होता। उसके नियम को सबको मौन–मूक भाव से स्वीकार करना पड़ता है।